



SHRI GIRISH YASHWANT PRABHUNE

Shri Girish Yashwant Prabhune is a social activist and writer working for the upliftment of Nomadic Tribes and Communities in Pune, Maharashtra. He is the Trustee of 'Krantiveer Chapekar Smarak Samiti Chinchwad' and founder of 'Punarutthan Samarasata Gurukulam'. Punarutthan Samarasata Gurukulam is a project dedicated to creating a harmonious society through education, both academic and skill based, for students from class I to X. More than 320 students from Pardhi, Dombari, Kolhati, Lamaan communities are studying in this school.

2. Born on 19th October, 1949, Shri Girish Prabhune graduated in B.A. (Inter). He associated with Gramayan—a rural development and research Organization which experimented with collective farming among the backward communities and re-established the migrated De-notified families of their original location. He organized – Bhatake Vimukta Vikas Parishad, a project for upliftment of ex-criminal and nomadic tribes and communities. It organized the different type of communities and tribes; made them socialize and imparted vocational training to young men & women. He promoted income generation programs for Vimukta Jati and Nomadic Tribes (VJNT) communities like bakery, brick making, pickles, Jams, papad making, dairy etc. He established self–help groups (SHGS) of women from such communities. He established 12 Hostels & 2 Schools. He implemented resettlement projects, for ex-criminals who have surrendered their lives and handed over the weapons to police force (by providing shelter, employment and community life). The project also studied the ethnic and anthropological specialities, differences among Vasantao Naik Vimukta Jatis And Nomadic Tribes(VJNT) communities.

3. Shri Girish Prabhune was the Founder member of various organizations namely, 'Yamgarwadi Prakalp'–VJNT communities at Tuljapur–in 1991; 'Ansarwada Prakalp'– for NT (Dombari) communities at Latur -1995; Medhangi Joshi –Nandiwale prakalp (NT) at Beed – 1997; Margamma-Mariaaiwale Prakalp NT at Penur -1995; Kolhati (Tribes performing folk dances, in which children are identified by the mother's name e.g. Kishore Shantabai Kale) At Nerle –1999. Member of CAPART Program of Government India (President of Anna Hajare)

4 Shri Girish Prabhune is a regular column writer, story writer for a well-known newspaper and periodicals in Marathi Language. He has written and published novels namely, 'Pardhi', 'Latankhali Santh Pani', 'Lok Aani Sanskruti' & 'Palavarcha Jina'. He worked as an editor and publisher of Asidhara weekly newspaper for couple of years.

5. Shri Girish Prabhune is the recipient of several honours and awards. He received Nagarkar Puraskar–Nagarkar foundation; Agarkar Puraskar-Lokmanya seva sangh, vill-parle, Mumbai Balasaheb Sathe Puraskar – By Labour Union; Tejas Puraskar – Tilak Vidyalya Dombivali Mumbai; Dharmveer Puraskar–By Dharamaveer Sambhaji Trust Pune; Amtoyodaya (Poorest from poorer) Puraskar- Mumbai; 'Chaturang' Jeevan Gaurav Puraskar – 2015; Z 24 Taas – 'Ananya Jivan Gaurav Puraskar' 2015; SantI Shwar Foundation & Rashtriya Seva Bharti – 'Sant Ishwar Seva Samman' 2016. 'Mrutyunjaykar Shivajirav Sawant Smruti Samajkar Puraskar' 2016.



श्री गिरीश यशवंत प्रभुणे

श्री गिरीश यशवंत प्रभुणे पुणे, महाराष्ट्र के खानाबदोश जनजातियों और समुदायों के उत्थान के लिए कार्य करने वाले एक सामाजिक कार्यकर्ता और लेखक हैं। वह 'क्रांतिवीर चापेकर स्मारक समिति चिंचवार' के ट्रस्टी तथा 'पुनरुत्थान समरसता गुरुकुलम्' के संस्थापक हैं। 'पुनरुत्थान समरसता गुरुकुलम्' कक्षा 1 से 10 तक के छात्रों के लिए शिक्षा, अकादमिक और कौशल शिक्षा दोनों, के माध्यम से एक समरसतापूर्ण समाज बनाने के लिए समर्पित एक परियोजना है। पारधी, डोंबरी, कोल्हाटी, लामान समुदायों के 320 से अधिक छात्र इस विद्यालय में पढ़ रहे हैं।

2. श्री गिरीश प्रभुणे का जन्म 19 अक्टूबर, 1949 को हुआ। उन्होंने बी.ए. (इंटर) तक की शिक्षा प्राप्त की है। वह 'ग्रामायण'—एक ग्रामीण विकास और अनुसंधान संगठन से जुड़े हुए हैं जिसने पिछड़े समुदायों में सामूहिक खेती के प्रयोग किए और पलायन कर चुके गैर—अधिसूचित परिवारों को उनके मूल स्थानों पर पुनः बसाया। उन्होंने 'भटके विमुक्त विकास परिषद्' बनाया, जो पूर्व में अपराधिक गतिविधियों में संलिप्त और खानाबदोश जनजातियों तथा समुदायों के उत्थान के लिए एक परियोजना है। इसने विभिन्न समुदायों और जनजातियों को संगठित किया, उनमें सामाजिकता का विकास किया तथा युवकों और युवतियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया। उन्होंने विमुक्त जाति एवं यायावर जनजाति (वीजेएनटी) समुदायों के लिए आय सृजन कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया, जैसे कि बेकरी, ईट बनाना, आचार, जैम, पापड़ बनाना, डेयरी आदि। उन्होंने इन समुदायों की महिलाओं को लेकर स्वयं सहायता समूह (एसएचजीएस) बनाए। उन्होंने 12 छात्रावासों और 2 विद्यालयों की स्थापना की। उन्होंने आत्मसमर्पण करने वाले तथा अपने हथियार पुलिस को सौंपने वाले पूर्व अपराधियों के लिए पुनर्वास परियोजनाएं चलाई (उन्हें आश्रय, रोजगार और सामुदायिक जीवन देकर)। इस परियोजना में वसंतराव नाईक विमुक्त जातियों तथा यायावर जनजातियों (वीजेएनटी) समुदायों के बीच जातीय और नृजातीय विशेषताओं, अंतरों आदि का भी अध्ययन किया गया।

3. श्री गिरीश प्रभुणे विभिन्न संगठनों के संस्थापक सदस्य थे, जैसे 'यमगारवाड़ी प्रकल्प'—तुलजापुर के वीजेएनटी समुदाय—1991 में; 'अंसारवाड़ा प्रकल्प'—लातूर में एनटी (डोम्बरी) समुदायों के लिए—1995; मेधांगी जोशी—बीड में नंदीवाले प्रकल्प (एनटी)—1997; मरगम्मा—पेनूर में मरीयाईवाले प्रकल्प एनटी—1995; नेरले में कोल्हाटी (लोक नृत्य करने वाली जनजातियां, जिनमें बच्चों की पहचान उनके मां के नाम से होती है, उदाहरण के लिए किशोर शांताबाई काले)—1999। वह भारत सरकार के केएपीएआरटी (कपार्ट) कार्यक्रम के सदस्य थे (जिसके अध्यक्ष अन्ना हजारे थे)।

4. श्री गिरीश प्रभुणे मराठी भाषा के एक प्रतिष्ठित समाचारपत्र और पत्रिकाओं में नियमित स्तंभ लेखक, कहानी लेखक हैं। उन्होंने कई उपन्यास लिखे और प्रकाशित किए हैं, अर्थात् 'पारधी', 'लटनखली शांत पानी', 'लोक आनि संस्कृति और 'पलवारचा जिना'। उन्होंने दो वर्षों तक असीधारा सप्ताहिक समाचारपत्र के संपादक और प्रकाशक के रूप में कार्य किया।

5. श्री गिरीश प्रभुणे को कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें नगरकर पुरस्कार—नगरकर फाउंडेशन; अगरकर पुरस्कार—लोकमान्य सेवा संघ, विले पारले, मुम्बई; बालासाहेब साठे पुरस्कार—श्रमिक संगठन द्वारा; तेजस पुरस्कार—तिलक विद्यालय, डोम्बीवली, मुम्बई; धर्मवीर पुरस्कार—धर्मवीर संभाजी ट्रस्ट, पुणे; अंत्योदय पुरस्कार—मुम्बई; 'चतुरंग' जीवन गौरव पुरस्कार—2015; जैड 24 तास—'अनन्य जीवन गौरव पुरस्कार' 2015; संत ईश्वर फाउंडेशन एवं राष्ट्रीय सेवा भारती—संत ईश्वर सेवा सम्मान' 2016, मृत्युंजयकर शिवाजी राव सावंत स्मृति सामाजिक पुरस्कार, 2016 प्राप्त हुए हैं।